हांडा ने जापान मोबिलिटी शो-2025 में अपनी नई इलेक्ट्रिक एसयूवी Honda 0 Alpha का ग्लोबल डेब्यू किया है। कंपनी ने कंफर्म किया है कि इस मॉडल को भारत में साल 2027 तक लॉन्च किया जाएगा और देश में ही लोकल मैन्युफैक्चरिंग के जरिए तैयार किया जाएगा। यह हांडा की नई 0 Series ईवी लाइनअप का पहला मॉडल है, जो भारत में कंपनी के इलेक्ट्रिक मोबिलिटी सेगमेंट की औपचारिक शुरुआत करेगा। *-फीचर डेस्क*

भारत में बनेगी होंडा की एसयूवी ईवी कार

डिजाइन में मिलेगा फ्यूचर का टच

Honda 0 Alpha का डिजाइन कंपनी के नए 'Thin, Light and Wise' कॉन्सेप्ट पर आधारित है, जो इसे बेहद मॉडर्न और आकर्षक लुक देता है। इसका लो और वाइड स्टांस एसयूवी को स्पोर्टी अप्रोच देता है। फ्रंट में दिए गए इंटीग्रेटेड LED हेडलैम्प्स, इल्यूमिनेटेड होंडा लोगो और कनेक्टेड DRLs इसे प्रीमियम टच देते हैं। पीछे की ओर U-शेप्ड LED लाइट सिग्नेचर इसकी फ्यूचरिस्टिक डिजाइन को और निखारता है। साइज की बात करें, तो इसका व्हीलबेस 2750mm है, जो Honda Elevate से करीब 100mm ज्यादा है। वहीं, ट्रैक भी 20mm ज्यादा चौड़ा दिया गया है, जिससे ऑन-रोड स्टेबिलिटी और इंटीरियर स्पेस दोनों में बढ़त मिलती है।

केबिन होगा ज्यादा स्पेसियस और टेक-लोडेड

अंदर की ओर भी यह एसयूवी मॉडर्न फिलॉसफी पर तैयार की गई है। Thin Packaging के चलते फ्लैट फ्लोर मिलता है, जिससे केबिन में ज्यादा स्पेस और आराम होगा। इसमें उन्नत कनेक्टेड फीचर्स, एक क्लीन और प्रैक्टिकल लेआउट और एक हाई-टेक डिजिटल इंटरफेस देखने को मिल सकता है। कंपनी ने फिलहाल पावरट्रेन और बैटरी से जुड़ी जानकारी साझा नहीं की है, लेकिन उम्मीद है कि यह मॉडल फ्रंट-व्हील-ड्राइव लेआउट के साथ आएगा और रेंज भी इस सेगमेंट में प्रतिस्पर्धी होगी।

भारतीय मार्केट में किससे होगा मुकाबला

भारतीय मार्केट में लॉन्च के बाद भारत में हांडा 0 अल्फा का मुकाबला सीधे Mahindra BE 6, Tata Curvv EV, Hyundai Creta Electric और Maruti Suzuki eVitara से होगा। यह मॉडल Honda Elevate EV प्रोजेक्ट की जगह लेगा और कंपनी की इलेक्ट्रिक कार सेगमेंट में एंट्री का रास्ता खोलेगा। साथ ही यह मॉडल कंपनी के इलेक्ट्रिक पोर्टफोलियो को यहां मजबूत आधार भी देगा।

ड्राइविंग से मत डरिए, स्टीयरिंग पकड़िए और सपने चलाइए

कार चलाना सुनने में भले ही आसान लगता है, लेकिन जब खुद स्टेयरिंग पकड़ने की बारी आती है, तो हाथ-पैर फूल जाते हैं। सबसे बड़ी दिक्कत डर की होती है। कहीं ब्रेक की जगह एक्सीलेटर दब गया तो? ट्रैफिक में किसी ने पीछे से टक्कर मार दी तो? लेकिन याद रखिए- डर वहीं होता है, जहां भरोसा कम होता है। बस थोड़ा आत्मविश्वास और सही दिशा में अभ्यास और आप भी बन सकते हैं एक परफेक्ट ड्राइवर। आज आपको बताते हैं वो आसान टिप्स, जो आपकी ड्राइविंग जर्नी को मजेदार और सुरक्षित बनाएंगी।

कार से दोस्ती करें

कार चलाने से पहले उसे अच्छे से जानें। कौन-सा पैडल ब्रेक है? क्लच कहां है? गियर कैसे बदलते हैं? इंडिकेटर्स किस तरफ हैं? इन सबको समझने में थोड़ा वक्त दें। जिस कार को आप चलाते हैं, उसका फंक्शन जितना बेहतर समझेंगे, उतना ही आपका डर कम होगा और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

फीचर्स को जानना भी जरूरी

आजकल की कारें कई स्मार्ट फीचर्स के साथ आती हैं- जैसे एसी, हीटर, क्रूज कंट्रोल, रियर सेंसर, एडीएएस सिस्टम आदि। इन्हें पहले ही सीख लें ताकि ड्राइविंग के दौरान आपको किसी बटन की तलाश न करनी पड़े।

पहले प्रैक्टिस, फिर ट्रैफिक

ड्राइविंग की शुरुआत किसी खाली ग्राउंड, पार्किंग एरिया या कम ट्रैफिक वाली सड़क पर करें। मैनुअल कार सीख रहे हैं, तो सबसे पहले क्लच-एक्सीलरेटर का बैलेंस सीखें। धीरे-धीरे क्लच छोड़ें, झटके से बचें, पहले-दूसरे गियर में ही चलाएं और ब्रेक लगाने से पहले एक्सीलेटर हटाएं। जैसे-जैसे आपका हाथ जमने लगे, थोड़ी-थोड़ी एक्टिव सड़क पर भी प्रैक्टिस बढ़ाएं।

सही सीट पोजीशन रखें

ड्राइविंग स्टार्ट करने से पहले सीट को इस तरह एडजस्ट करें कि क्लच और ब्रेक पूरी तरह दब सकें और स्टीयरिंग पर आपकी मजबूत पकड़ बनी रहे। साथ ही सीट बेल्ट पहनें, साइड और रियर मिरर सही सेट करें और चलते समय मिरर चेक करते रहें। यह छोटी आदतें बड़े हादसों से बचाती हैं।

स्टीयरिंग

स्टीयरिंग व्हील को घड़ी मानें। अपने हाथों को 9 बजे और 3 बजे की पोजीशन पर रखें। इससे आपको बेहतर कंट्रोल मिलेगा और मोड़ लेने में भी आसानी होगी।

मॉय फर्स्ट राइड

मुहल्ला ही नहीं, फिर तो पूरा शहर ही जान गया

छोटी उम्र में पहाड़ों के सफर में बस ड्राइवर को मोड़ काटते स्टेयरिंग घुमाने में ताकत लगाते देखना बड़ा रोमांचकारी होता था और खुद के भी गाड़ी चलाने की तीव्र इच्छा होती थी। उस दौर में पॉवर स्टेयरिंग नहीं हुआ करते थे। घर पर चेयर पर उल्टा बैठकर गाड़ी चलाने, गियर चेंज करने की मॉक ड्रिल करते-करते जब 12वीं में पहुंचा तो सबसे पहले चाचा की जीप को घर पर सिर्फ पार्क करना और बैक करने से गाड़ी चलाना सीखने की शुरुआत हुई। चाचा जी कभी-कभी प्लेन सड़कों पर ब्रेक, क्लच पर अपना नियंत्रण रखते हुए सिर्फ स्टेयरिंग देते थे, जिससे जीप को सड़क पर नियंत्रित रखने का अभ्यास हुआ।

गाड़ी चलाने का शौक, जुनून बन गया। चाचा की जीप को पार्क करने से शुरुआत हुई। फिर कभी-कभार खाली सड़कों पर या सुबह-सुबह गाड़ी चलाने को मिल जाती थी, जिससे सड़क पर गाड़ी चला लेने का स्वयं के भीतर आत्मविश्वास पैदा हुआ। उस समय पापा हर शनिवार को नौकरी से घर आते और ड्राइवर अंकल भी गाड़ी खड़ी कर अपने घर चले जाते थे। गाड़ी सीखने की असली शुरुआत शनिवार को ही फ्री हैंड होती थी। मैं ऐसे वक्त के इंतजार में हमेशा रहता था और तब भीषण गर्मी में जब सब आराम कर रहे होते थे, तो चुपके से बिना किसी को बताए चाबी लेकर बाहर निकल जाता और गाड़ी स्टार्ट कर घर के बाहर की सड़क पर निकल आता था। पहली शुरुआत में ही गाड़ी को धीरे-धीरे निकाला। उन दिनों सड़कों पर इतना ट्रैफिक नहीं होता था। पहली बार जब गाड़ी चलाई, सिर्फ फर्स्ट गियर में ही धीरे-धीरे घर से करीब एक किलोमीटर तक निकल आया था और ऐसी इच्छा प्रबल हुई कि मोहल्ले के दोस्त, परिचित, जानने वाले लोग मुझे गाड़ी चलाते हुए देख लें, जिसके लिए सड़क पर यदि कोई परिचित जाता हुआ दिखता था, तो हॉर्न बजाकर उनको यह दिखाने की कोशिश करता था कि वो मुझे देख लें कि मैं गाड़ी चला रहा हूं। ऐसे ही पहले दिन इसी उत्सुकता में ब्रेक और क्लच का तालमेल गड़बड़ाया और वापसी में गाड़ी पड़ोसी की दीवार से जा टकराई। फिर तो ऐसा शोर मचा कि पूरी हल्द्वानी को ही पता चल गया कि मैं गाड़ी चलाना सीख रहा हूं। गाड़ी चलाने के इस रोमांच को पाने के लिए सुबह उठते ही मैं रोज गाड़ी को साफ किया करता था। धीरे-धीरे इसी तरह गाड़ी चलाते-चलाते बिना किसी मोटर ड्राइविंग ट्रेनिंग संस्थान की मदद के स्वयं ही गाड़ी चलाना सीख लिया। हालांकि वो शुरुआती दिनों में खड़ी गाड़ी में गियर डालना, स्टेयरिंग घुमाना आज भी याद है और एक खुशनुमा एहसास देता है। ***-विनोद मेहरा**, हल्द्वानी*

कार के ब्लोअर की लाइफ बढ़ाने के स्मार्ट उपाय

सर्दियों के मौसम में जब तापमान तेजी से गिरता है, तब कार का हीटर और ब्लोअर हमारी सबसे बड़ी जरूरत बन जाते हैं। गर्म हवा मिलने से सफर आरामदेह होता है और विंडस्क्रीन पर जमा कोहरा भी जल्दी साफ होता है, लेकिन अक्सर लोग ब्लोअर की केयर पर ध्यान नहीं देते और बाद में हवा कम आना, मोटर जल जाना या डक्ट्स से बदबू आने जैसी परेशानियों का सामना करते हैं। इसी वजह से जरूरत है कि कुछ आसान उपाय अपनाकर ब्लोअर सिस्टम को लंबे समय तक बढ़िया स्थिति में रखा जाए।

ब्लोअर को तुरंत हाई न करें

सबसे पहले ध्यान रखें कि कार स्टार्ट करते ही ब्लोअर को तेज स्पीड पर न चलाएं। जब इंजन, डक्ट्स और मोटर पूरी तरह ठंडी हो, तो अचानक हाई स्पीड से उन पर दबाव बढ़ता है, जिससे नुकसान हो सकता है। इसलिए 30-60 सेकंड तक लो स्पीड रखें और फिर धीरे-धीरे स्पीड बढ़ाएं।

केबिन एयर फिल्टर की सफाई करें

केबिन एयर फिल्टर को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। यह फिल्टर हवा में मौजूद धूल को रोकता है, लेकिन समय के साथ चोक हो जाता है और ब्लोअर की परफॉर्मेंस गिर जाती है। हर 6-12 महीने में इसकी सफाई या बदलाव जरूर करवाएं। इससे न सिर्फ हवा की रफ्तार बढ़ेगी, बल्कि एसी व हीटर दोनों सुचारु रूप से काम करेंगे।

ब्लोअर चलाते समय एसी ऑन रखें (डिफॉग के लिए)

सर्दियों में विंडस्क्रीन पर नमी जमना आम समस्या है। ऐसे में ब्लोअर के साथ एसी चालू रखें। एसी नमी को कम करता है और शीशा जल्दी साफ होता है। शुरुआत में Windshield + Feet मोड चुनें ताकि अंदर की नमी घटे और केबिन जल्द गर्म हो। बाद में इसे अपनी सुविधा के अनुसार बदल सकते हैं।

हवा की सही दिशा सेट करें

कार के बोनेट के पास एयर-इनटेक एरिया होता है, जहां पत्तियां और धूल जमा होने पर ब्लोअर में घुस सकती हैं। यह स्थिति मोटर को नुकसान पहुंचाती है और अजीब आवाजें भी पैदा करती है। इसलिए कार वॉश के समय इस हिस्से की सफाई के लिए विशेष ध्यान दें।

पत्तियां/धूल ब्लोअर में न जाने दें

साल में कम से कम एक बार HVAC (हीटर, वेंटिलेशन, एसी) की पूरी सर्विस कराएं। इससे डक्ट्स में जमा फफूंदी व बैक्टीरिया हट जाएंगे और बदबू से भी छुटकारा मिलेगा। इसके अलावा ठंडे मौसम में इलेक्ट्रिकल वायरिंग और कनेक्शन ढीले या हार्ड हो सकते हैं, जिन्हें समय पर चेक कराना चाहिए।